उत्पत्ति १७

- अब्राहम निन्यानबे वर्ष का हो चुका है।
- अध्याय १६ और अध्याय १७ के आरम्भ के बीच तेरह वर्ष व्यतीत हो चुके हैं।
- इश्माएल लगभग तेरह वर्ष का है।
- सारै अब भी बाँझ है।
- कुल कनान देश में ही निवास कर रहा है।
- तेरह वर्षों तक परमेश्वर से कोई वार्तालाप नहीं हुआ।
- अब्राहम की वाचा अब भी अक्षुण्ण बनी हुई है।

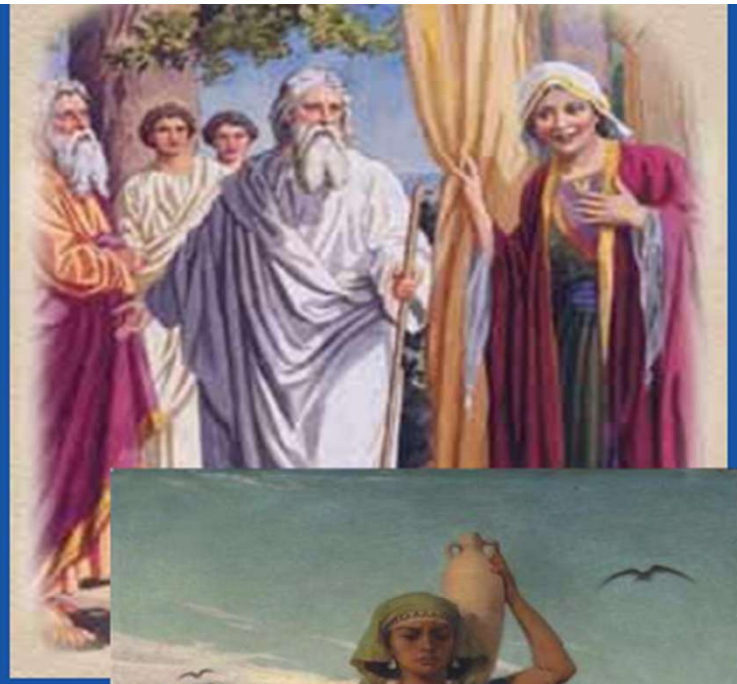

एक नयी वाचा

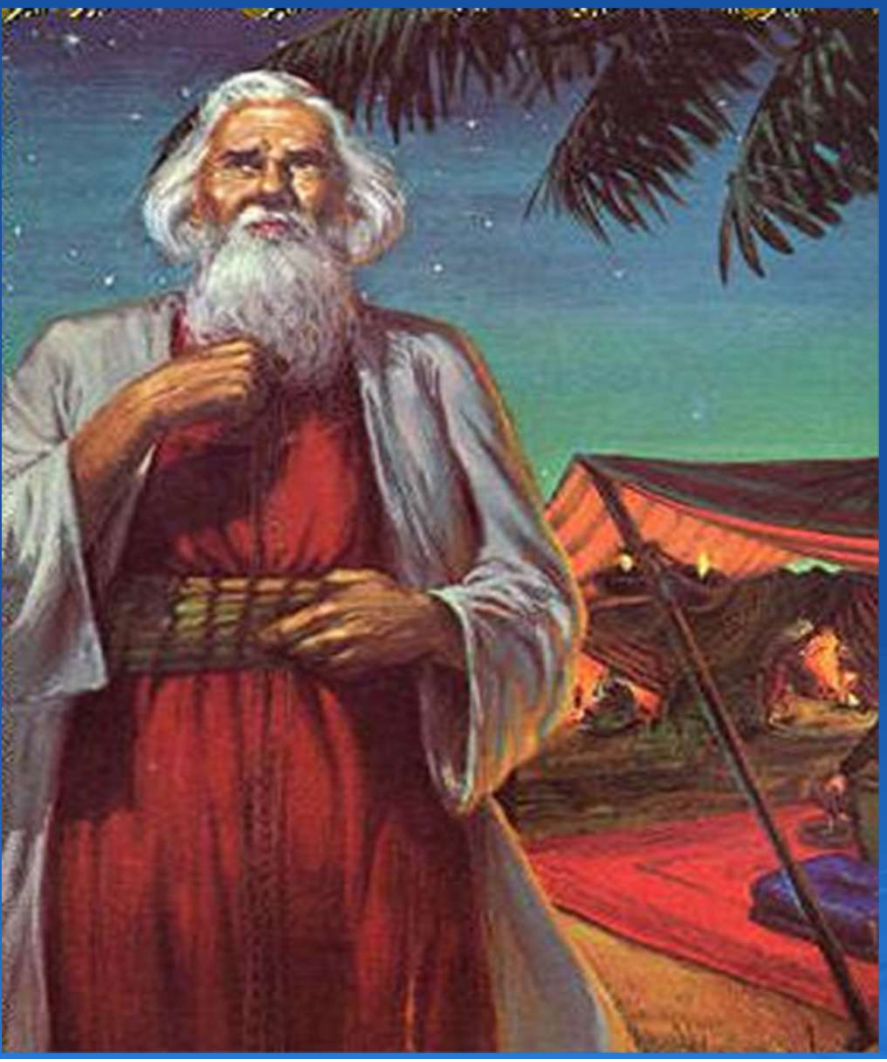

- अब्राहम बहुत-सी जातियों का पिता होगा।
- "जातियाँ" = गोयिम
- गोयिम का अर्थ है वे जातियाँ या लोग जो इब्री नहीं हैं।
- किन्तु अब्राहम के दिनों में इसका अर्थ था "कोई भी राष्ट्र"।
- अब्राहम ने दोनों की सन्तान उत्पन्न की – इब्रियों की भी और अन्-इब्रियों की भी।
- परमेश्वर अब्राम का नाम बदलकर "अब्राहम" कर देता है।
- इसका अर्थ है "अनेक का पिता"।
- इब्री शब्द = इपूरु
- "वह जो पार हो गया?" (एक जो पार हो गया?)

पद ६: परमेश्वर एक और वाचा जोड़ता है... शर्तयुक्त

- इसका अर्थ यह हुआ कि अब्राहम और उसके वंशजों पर कुछ विशेष कर्तव्य और बाध्यताएँ थीं।
- यह नयी वाचा व्यक्तिगत आधार पर थी।
- प्रत्येक व्यक्ति स्वयं चुनता था और व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होता था... यह दूसरों को प्रभावित नहीं करती थी।
- नयी वाचा में पुरुषों का खतना शामिल था।

पद ८: भूमि अब्राहम के वंशजों को सदा के लिए मिली हुई है

- “कब्जा करना” “स्वामित्व” के समान नहीं है।
- “कब्जा करना” का अर्थ है भूमि पर “किरायेदार” के रूप में रहना।
- इस्राएल मिस्र में रहते हुए भी भूमि इस्राएल की ही थी।
- इस्राएल ने निर्वासन के समय कभी भी भूमि का स्वामित्व नहीं खोया, उन्होंने केवल भूमि पर कब्जा खोया था।
- **इस्राएल ने भूमि का स्वामित्व कभी नहीं छोड़ा, वे भूमि के किरायेदार के रूप में सदैव उसके स्वामी रहे हैं!!**

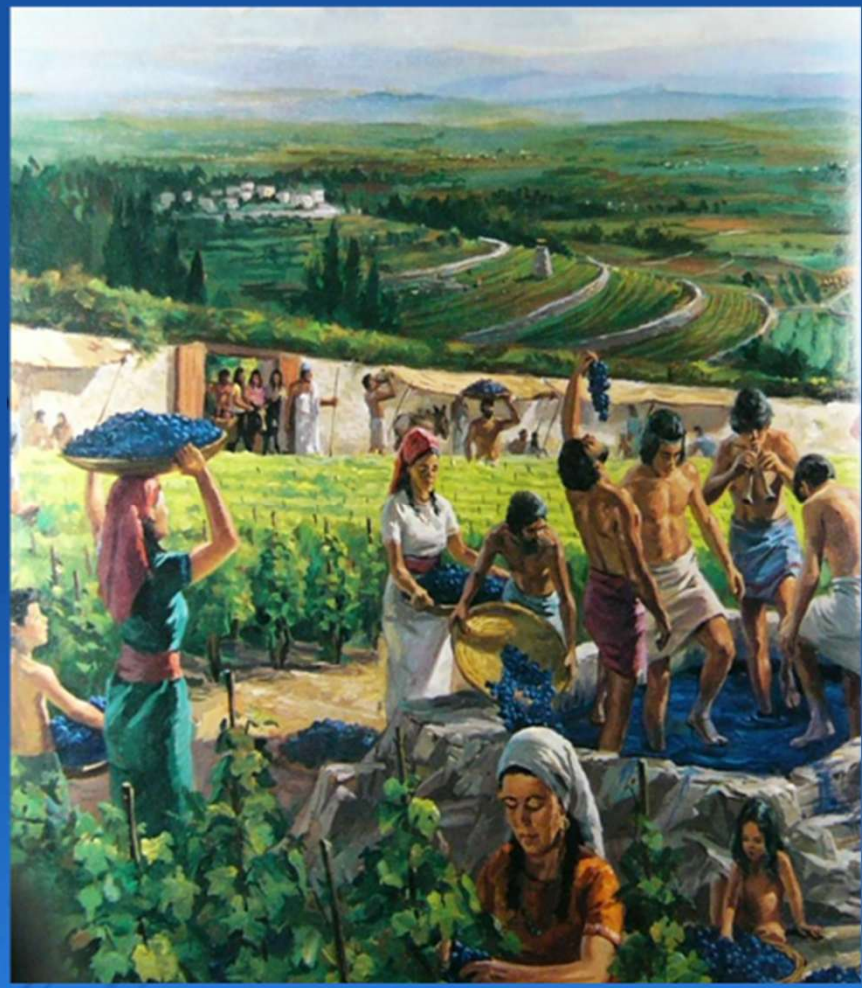

पद ७: "...और तुम्हारी सन्तान के बाद आने वाली पीढ़ियों के साथ सदा की वाचा"

- यह एक वैधानिक (कानूनी) घोषणा थी।
- उस युग की व्यवस्था के अनुसार, यदि वे शब्द न होते तो स्वामी भूमि को खो सकता था, क्योंकि भूमि पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती थी।
- उन शब्दों के साथ यह अर्थ हुआ कि भूमि परिवार में अनिश्चित काल तक, बिना किसी बंधन के बनी रहेगी।
- प्रथम वाचा में अब्राहम निष्क्रिय भागीदार था।
- द्वितीय वाचा में सक्रिय भागीदारी आवश्यक थी... खतना।
- खतना अब "वाचा की वंशावली" का भाग बनने के लिए आवश्यक हो गया था।

खतना सस्कार

- पुरुषों का खतना इब्रियों की अपनी आविष्कार नहीं था।
- यह प्रायः विवाह संस्कार का एक अंग होता था।
- यह बालकों के लिए यौवन में प्रवेश का संस्कार था। परमेश्वर ने इसे "निष्ठा की शपथ" के रूप में
- उपयोग किया।
  जन्म के आठवें दिन इसका संस्कार किया जाना
- था।
  यह वाचा स्थापित करने से घनिष्ठ रूप से जुड़ा था
- (पशु के मांस को चीरा जाना)।
  जो पुरुष इब्री खतनारहित होता था, वह परमेश्वर
- की प्रजा में गिना ही नहीं जाता था!
  प्रेरित पौलुस ने "खतनारहित हृदय" पर विशेष बल
- दिया।

ब्रित मिलाह संस्कार

ब्रीस

पद १२: परमेश्वर का महत्वपूर्ण सिद्धान्त

- **सिद्धान्त: अब्राहम की शारीरिक वंशावली का भाग होना आवश्यक नहीं था, वाचा में सम्मिलित होने के लिए!**
- कोई विदेशी भी इस्राएल में सम्मिलित हो सकता था।
- खरीदे हुए दास स्वतः परिवार के सदस्य गिने जाते थे।
- यह सिद्धान्त ऋण के कारण बंधुआ दासों पर लागू नहीं होता था।
- अन्यजातियाँ आज भी इसी सिद्धान्त पर आश्रित हैं, जिससे वे इस्राएल की वाचाओं के द्वारा परमेश्वर के परिवार का भाग बन सकें।

इश्माएल: संघर्ष का आधार

- यहोवा अब्राहम से कहता है कि सारै उसे एक पुत्र देगी।
- साराह लगभग नब्बे वर्ष की हो चुकी थी!
- **पद १८: "क्या केवल इश्माएल ही तेरे सामने जीवित रहे!"**
- अब्राहम इश्माएल को अपना ज्येष्ठ पुत्र समझता था।
- पद १९: परमेश्वर कहता है, "नहीं!" इश्माएल वाचा का वारिस नहीं होगा।

यहोवा ने इश्माएल को अपनी वाचा का वारिस नहीं ठहराया।

- उत्तराधिकारी इसहाक होने वाला था, जो सारा का पुत्र था।
- यहाँ विभाजन, पृथक्करण और चुनाव (चयन) हुआ।
- इसहाक इस्राएलियों का पितामह (दादा) था।
- इश्माएल अरबों का पितामह (दादा) था।
- इस्लाम एक धर्म है, कोई जाति या वंश नहीं।

- इस्लाम अरबों का धर्म है।
- इश्माएल शापित नहीं, वरन् परमेश्वर द्वारा आशीषित था।
- इश्माएल को इसहाक के समान बारह (१२) गोत्रों का वचन दिया गया था।

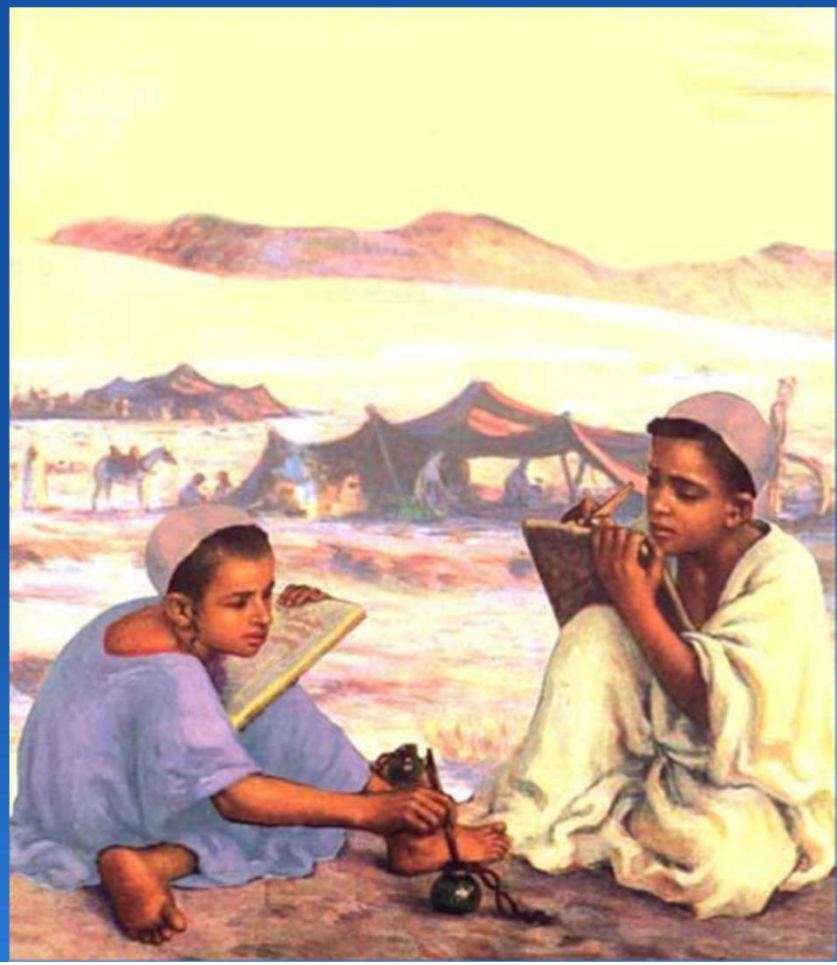

उत्पत्ति १८:
हेब्रोन की पहाड़ियों में

हेब्रोन, पतरियाग्हों का नगर ऐक्रैलिक चित्रकारी, कलाकार बरूच नकशोन द्वारा

“और यहोवा प्रकट हुआ...”

- अदोनाय का अर्थ है – प्रभु, स्वामी।
- यहाँ “अदोनाय” शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है।
- यहाँ प्रयुक्त नाम य-ह-व-ह (YHWH) है – यूद, हे, वाव, हे।
- यहोवा ।
- “अदोनाय” शब्द का प्रयोग करना एक परंपरा है, जिससे लोग “परमेश्वर” अथवा “यहोवा” नाम का उच्चारण करने से बचते हैं।
- यहूदी लोग “G_d” (परमेश्वर) इस प्रकार लिखते हैं।
- यहूदियों का विश्वास है कि उसके पवित्र नाम का उच्चारण भी व्यर्थ में उसका नाम लेने के समान हो सकता है।

संत पौलुस ने शिक्षा दी कि हमें उन बातों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए जो दूसरों को ठेस पहुँचाती हैं

- मैं यह नहीं मानता कि परमेश्वर के नाम का उच्चारण करना उसके नाम को व्यर्थ लेना है।
- तथापि, मैं यहूदियों की उस मान्यता का सहज ही सम्मान कर सकता हूँ कि ऐसा करना परमेश्वर के नाम को व्यर्थ लेना है, और उनकी उपस्थिति में उस विश्वास का आदर करता हूँ।
- इस अध्ययन-श्रेणी (कक्षा) में परमेश्वर के अनेक नामों का प्रयोग किया जाएगा।

३ पुरुष अब्राहम को दिखाई दिए।

- इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह परमेश्वर का प्रकट होना था, क्योंकि यहाँ उसकी पहचान 'यहोवा' के रूप में की गई है।
- क्या यह यीशु हो सकते थे?
- पवित्रशास्त्र में कहीं भी यीशु को 'यहोवा' नहीं कहा गया है, जो पिता का नाम है।
- 'अदोनाय' एक बहुवचन शब्द है।
- 'एनोश' का अर्थ है – मनुष्य अथवा मानव जाति।

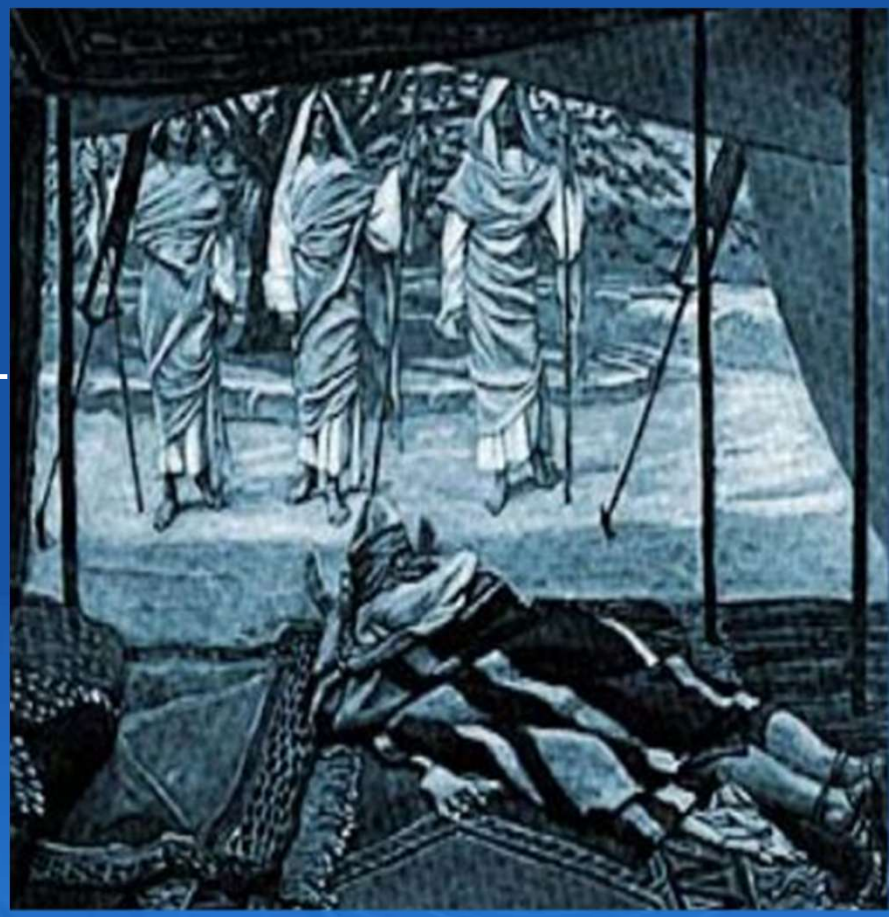

मध्य-पूर्वी प्रदेशों की प्रचलित अतिथि-सेवा की रीति
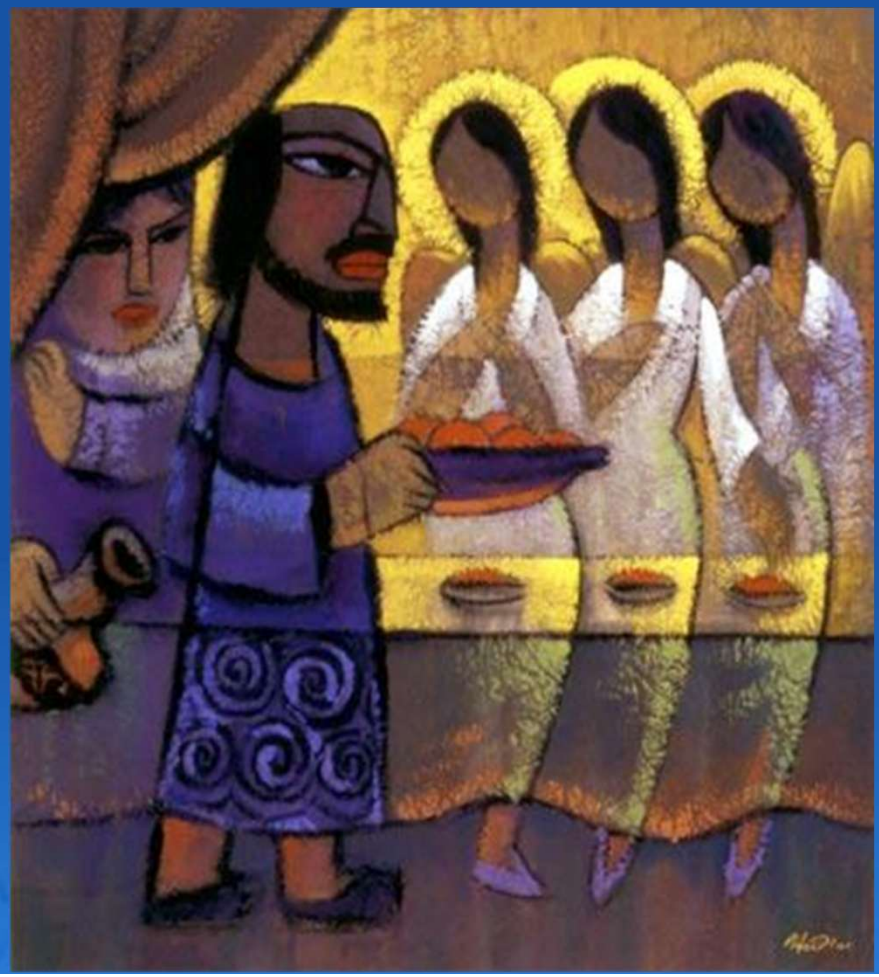
- • यह सारा शीघ्रता करना और दण्डवत् प्रणाम करना उस समय की प्रथा के अनुसार था।
- • सारा को भोजन तैयार करने की आज्ञा दी गई, और उन तीनों व्यक्तियों ने वह भोजन ग्रहण किया।
- • यह कैसे सम्भव है कि परमेश्वर और स्वर्गदूत भोजन करते हुए दिखाई दें?
- • निश्चय ही यहाँ कोई अलौकिक घटना घटित हो रही थी।
- • वे सारा की बाँझपन की अवस्था से परिचित थे।
- • उनके पास अधिकार और सामर्थ्य थी।